MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

April To June 2021
Special Issue-02

अतिथि संपादाक :

१. शिवशेट्टे गोविंद
२. डॉ. राठोड अनिल
३. डॉ. भगवान कदम
४. डॉ. शिंदे प्रकाश
५. डॉ. शेख मुखत्यार
६. डॉ. वारले नागनाथ
७.डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Date of Publication
15 May 2021

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

www.विद्यावार्ता®.कॉम
YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyavarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats).

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT 7.940 iijif FACTOR

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

http://www.printingarea.blogspot.com

27

२१ वीं सदी में भी डायन, बायेन, टोहनी कु–प्रथाओं से प्रताड़ित है

डॉ. सुरेखा जवादे
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
सेंट थॉमस महाविद्यालय रूआबांधा, भिलाई, छ.ग.

****

नारी

आधुनिक सामाजिक परिवेश में अपना निजी अस्तित्व बनाये रखने, स्वाभिमान एवं पुरुषों की दास्ता से मुक्त होने के लिए संघर्षरत नारी जीवन पर आधारित, कई कहानियाँ देखने में आई है। आज भी नारी अपनी नारीत्व की सार्थकता सिद्ध करने के लिए संघर्षरत है। महाश्वेता देवी की कहानी बांयेन, ईट के ऊपर ईट, शनिचरी आदि कहानियों में स्त्रियों की समाज में दुर्दशा का चित्रण किया गया है। यह सभी कहानियाँ समाज में व्याप्त कुरूतियों का बखान करती हैं। महाश्वेता देवी द्वारा रचित बांयेन कहानी भारतीय समाज की कु–प्रथाओं पर आधारित कहानी है, जिसमें समाज द्वारा बिना किसी प्रमाण व वैज्ञानिक आधार पर सामान्य स्त्री को केन्द्रित कर डायन, बांयेन या टोनही करार घोषित कर दिया जाता है।

कहानी एक ग विधा हैं। इस विधा में समग्र जीवन का चित्रण न होकर किसी घटना विशेष का चित्रण होता हैं। कहानी का प्राचीन नाम संस्कृत में 'गल्प' या 'आख्यायिका' मिलता हैं, लेकिन आधुनिक युग में कहानी के नाम से जिन रचनाओं का अवतरण हुआ वे संस्कृत साहित्य में गल्प या आख्यायिका के नाम से मिलने वाली रचनाओं से अलग हैं। इसलिए कहा जाता है कि आजकल की हिन्दी कहानियाँ है तो भारत की पुरानी कहानियों की ही संतति; किन्तु विदेशी संस्कार लेकर आयी है।

मुंशी प्रेमचन्द ने कहानी पर विचार करते हुए कहा हैं कि, "कहानी (गल्प) एक रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, शैली तथा कथा विन्यास सब उसी एक भाव को पुष्ट करते है।" मुंशी प्रेमचन्द उस कहानी को सर्वोत्तम मानते हैं, "जो किसी मनोवैज्ञानिक सत्य पर आधारित हो।" कहानी में जीवन के तथ्य, सत्यता, संवेदना एवं प्रभावपूर्ण चित्रण को देखा जा सकता है। कहानी केवल मनोरंजन मात्र नहीं, कुछ कहानियाँ सत्यता पर भी आधारित रहती है। जो समाज को आईना देखने को मजबूर करती है। आधुनिक सामाजिक परिवेशमें अपना निजी अस्तित्व बनाये रखने, स्वाभिमान एवं पुरुषों की दास्ता से मुक्त होने के लिए संघर्षरत नारी जीवन पर आधारित, कई कहानियाँ देखने में आई है। आज भी नारी अपनी नारीत्व की सार्थकता सिद्ध करने के लिए संघर्षरत है।

महाश्वेता देवी की कहानी बांयेन, ईट के ऊपर ईट, शनीचरी आदि कहानियों में स्त्रियों की समाज में दुर्दशा का चित्रण किया गया है। यह सभी कहानियाँ समाज में व्याप्त कुरूतियों का बखान करती हैं। महाश्वेता देवी द्वारा रचित बांयेन कहानी भारतीय समाज की कु–प्रथाओं पर आधारित कहानी है, जिसमें समाज द्वारा बिना किसी प्रमाण व वैज्ञानिक आधार पर सामान्य स्त्री को केन्द्रित कर डायन, बांयेन या टोनही करार घोषित कर दिया जाता है। अंध विश्वास से ओतप्रोत होकर इन बेकसूर महिलाओं को समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है और मानवता की सभी सीमाओं को लांघ कर हत्या कर दी जाती है आजादी के ७२वर्ष बाद भी भारतीय समाज में यह बुराई स्थापित है।

लेखिका ने बांयेन कहानी के माध्यम से अन्ध विश्वास पर आधारित परंपरागत रूढ़ीवादी कुरूतियों को झुठा साबित करने का प्रयास किया।उन्होंने इस कहानी के पात्र चण्डी जो कि शमशान घाट मे लाशों का कफ़न–दफ़न का इंतजाम करने एवं रखरखाव करने वाली परिवार की महिला की दिनचर्या को उल्लेखित करते हुए, यह समझाने का प्रयास किया है कि वह कोई बांयेन (डायन) जैसी मिथ्या नहीं है,

बल्कि उसके हृदय में भी ममता और मानवता समाई हुई है, चण्डी के पिता की मौत के बाद डोम के कार्य को करते हुए लाशों के बीच रहते हुए निर्भय दृष्टिकोण को बताया है। आगे जाकर उसका विवाहएक ऐसे ही परिवार के पुरूष मलिन्दर के साथ होता है। सामाजिक परम्पराओं का पालन करते हुए चण्डी भी माँ बनती हैं। वह अपने नन्हें को गोद मे खिलाते हुए डोम का कार्य भी करती। वही उसका पति मलिन्दर डॉक्टरों को लाश दिया करता था। ऐवज में उसे कुछ रूपये मिल जाया करते थे। इन्ही रूपये एवं सरकारी तन्ख्वाह को मिलकर परिवार चलाता था।

चण्डी का पुत्र भागीरथी भी धीरे—धीरे बढ़ने लगा था। समयउपरांत रिश्तेदार अपने छोटे बच्चे के साथ मलिन्दर के घर पहुँचाते है, कुछ दिन बाद उसी रिश्तेदार का पुत्र बिमार हो जाता है। चण्डी उसका इलाज कराने के लिए गाँव के वैध के पास जाती है, कुछ समय बाद उस बच्चे की मौत हो जाती है और उस बच्चे की मौत का आरोप चण्डी पर लगता है।आस—पड़ोस के लोग उसे बांयेन (डायन, टोहनी) के नाम से अलंकृत करते है। परन्तु उसका पति सुन्दर एवं सुशील बहु को बांयेन मानने से इंकार करता है। एक दिन अचानक उनका पड़ोसी पहुँचकर शोर मचाता हैं। शराब के नशे में डुबा मलिंदर उठता है और पुछता है क्या हो गया? उस पर वह पड़ोसी कहता है कि तुम्हारी पत्नी डायन बन चुकी है और बरगद के पेंड के नीचे बैठकर ढोल बजा रही है। स्थल पर पहुँचकर मलिन्दर अपनी पत्नी का भयावह रूप देखकर मान लेता है कि वाकई वह बांयेन बन गई है। ग्रामीण परम्परा के अनुसार चण्डी को गांव के बाहर निकाल कर, उसे रहने के लिए एक झोपड़ी दे दी जाती है और ऐसा अन्धविश्वास का अंधेरा पूरे गाँव को घेर लेता है। लोगो द्वारा कथन इस डायन की नजर से बच कर रहना, नहीं तो गांव के हर बच्चे को मार डालेगी। ग्रामीण किवदन्ती रही है कि जिन मासूम पर डायन की नजर पड़ेगी उस बच्चे का खून सूख जायेगा।

बांयेन कहानी में मलिन्दर अपनी जाति से ऊपर उठ जाता है। अंधविश्वास के सत्य को मानते हुए मलिन्दर अपने पुत्र भागीरथी को उसकी माँ बायंने से अलग कर देता है। दूसरा विवाह कर इस रूढ़ीवादी अन्धविश्वास के कारण अपनी पत्नी को माँ कहलाने का हक तक छीन लेता है। केवल एक अनहोनी घटना के बलबूते महिला को समाज से बहिष्कश्त किये जाने की इस कुप्रथा की अनुभूति करते हुए लेखिका ने महिला की व्यथा को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है।

बांयेन कहानी में—

"क्यों आयी है? भगीरथ के पिता ने धीमे से फुफकार कर पूछा था।

मेरे पास सिर का तेल नहीं है, गंगापुत्र। घर में केरोसिन नहीं है। मुझे अकेले डर लगता है, जी।

बंयेन रो रही थी। कृकृ चण्डी बांयेन की छाया की आंखों से आंसू चू रहे थे।"

चण्डी बांयेन अपने पति के घर जरूरत का सामान लेने पहुँचती है तब उसके पति को अच्छा नहीं लगता। वह क्रोधित होकर समाज से निकाले जाने के बाद घर पर आने का कारण पूछता है। तब वह असहाय महिला जिसे डायन से भी बढ़कर मानने वाले पति के सामने मजबूर होकर अपनी आवश्यक वस्तुओं में सिर में लगाने का तेल, सूनसान स्थान पर गांव के बाहर लोगो द्वारा बनाई गई झोपड़ी में अंधेरे को दूर करने के लिए मिट्टी का तेल मांगती है, जिस बांयेन से पूरा समाज व पूरा गांव डरता है। वह भी अंधेरे से डरने की बात अपने पति को बताती है और इस दर्द को व्यक्त करते हुए रोने लगती है।जबरदस्त मिथ्या एवं अंधविश्वासों के जरिये पूरा गांव चण्डी को प्रताड़ित करने से नहीं चुकता। उसका पति असीमित प्रेम करता था। उसे इसी महिला ने संतान तक दी थी। उसके आंखों से बहते आंसू चण्डी के सामान्य होने का प्रमाण दे रहे थे। बावजूद उसके पति ने स्वीकार नहीं किया।

"पैसे लेगी? ले।"

"मुझे सामान बेचेगा कौन?"

"मैं खरीद दूंगा, तू अब जा।"

"मैं अकेली नहीं रह सकती।"

"तो बांयेन क्यों हुई? जो कहता हूँ, कर।"

सिर में लगाने का तेल व केरोसिन प्राप्ति के

लिए मलिन्दर अपनी बांयेन बन चुकी पत्नी को पैसे देने की बात कहता है। परन्तु वह अबला नारी अपनी बात कहती है कि एक बांयेन बनाई गई महिला को भला सामान कौन देगा? न तो उससे कोई सामान लेता है और न कोई देता है। इसलिए पति कहता है कि दोनों ही सामग्री लेकर दें देंगें अब तू चली जा। वह पुन: अपनी व्यथा व्यक्त करते हुए कहती है कि मैं अकेली नहीं रह सकती। इस पर मलिन्दर कहता है कि तुम बांयेन क्यो बन गई? बांयेन भी उसे यही समाज बनाता है और कहता है बन गई। अपने पति के साथ सटे हुए बच्चे को देखकर कहती है यह मेरा पुत्र है क्या? इस पर माँ और पुत्र की ममता के बीच आते हुए निर्दयता पूर्वक पति द्वारा अपनी ही पत्नी पर कीचड़ फेंक कर भागने पर मजबूर कर देता है।

सभी गांव वालों को मालूम था कि भगीरथ ही चण्डी बांयेन का पुत्र है। इसलिए भगीरथ की पूरे गांव में अच्छी पूछ—परख थी, सभी लोग उसे प्यार देते थे। जो मांगता था उसे आसानी से उपलब्ध करा दिया जाता था। लेकिन यह सब कुछ हर डोम प्रजाति के बच्चे के साथ नहीं होता, लेकिन भगीरथ बांयेनपुत्र होने के कारण ही उसके साथ अच्छा व्यवहार किया जा रहा था, क्योंकि गांव वालो को डर था कि यदि बांयेन के पुत्र को सताया गया तो बांयेन उनके बच्चों के साथ दुर्व्यवहार कर सकती है। समय गुजरता है भागीरथ को पिता उसकी माँ से परिचित कराता है। बांयेन के व्यक्तित्व के प्रति लेकर गड़ी गई कहानियों से भयभीत भागीरथ अपने पिता से कहता है कि बांयेन भी किसी की माँ या पति कैसे हो सकती है? जिसकी नजर भर से बच्चे की मौत हो जाती है। यह बात भागीरथ पिता से जानने का प्रयास करता है कि मेरी माँ बांयेन कैसे बनी? वह मनुष्य द्वारा बनाई गई इस अंधविश्वास नुमा बुराई को भगवान का हवाला देकर उससे जोडने का प्रयास करता है। समय गुजरने के साथ भागीरथ गाँव से दूर बनी माँ की झोपड़ी के पास कभी—कभी मिलने भी जाता है।

इस कहानी में डकैत ट्रेन लूटने के लिए पटरी पर बांस का पहाड़ बना कर अवरोध उत्नन्न करते है। जिसे रात के अंधेरे में भी चण्डी डकैतो के इस अपराधिकृत को देख लेती है। रेल को इस दुर्घटना से बचाने के लिए पूरी ताकत के साथ डाकुओं का विरोध करती है और बांस के पहाड़ को पटरी से हटाने का आदेश डाकुओं को देती है। चण्डी को आभास था कि ट्रेन की टक्कर बांस के पहाड़ से हुई तो निश्चित रूप से इस दुर्घटना में कई लोगों की जान जायेगी। यह बात चण्डी को सताती है। इसलिए वह रेल को रोकने के लिए पटरी पर दौड़ने लगती है। ट्रेन के न रूकने पर वह स्वयं ही ट्रेन के सामने कूदकर जान देकर ट्रेन को दुर्घटना होने से बचा लेती है। उसके हृदय में मानवता जीवित थी। दूसरी ओर चण्डी की यह सोच उसके सामान्य महिला होने का भी प्रमाण थी।

यह बताने का प्रयास किया गया है कि हमारे समाज में अंधविश्वास और कु—प्रथाओं के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। जिस महिला को पूरे गांव द्वारा प्रेत आत्मा डायेन अथवा टोहनी का अलंकरण देकर समाज से बहिष्कृत कर, उस सामान्य महिला को अपने पुत्र एवं पति के प्रेम से रातो—रात वंचित कर दिया जाता है वह महिला समाज द्वारा लगाये गये लांछन को धोने के लिए अपने प्राणों की आहुति तक दे देती है। उसके द्वारा दी गई प्राणों की आहुति कई निर्दोष जिंदगी के लिए विघ्नहर्त्ता के रूप में प्रकट होकर प्राणों की रक्षा करती है कई कु—प्रथाओं एवं किदवंतियों के आधार पर मानसिक रूप से विक्षिप्त समाज के समक्ष स्वयं को निर्दोष प्रमाणित करने के लिए एक मां एवं पत्नी को अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ती है। समाज द्वारा डायन बनाई गई महिला भी कभी प्राणरक्षक हो सकती है ऐसा परिणाम आने के बाद समाज का सिर शर्म से झुक जाता है लेखिका स्पष्ट करती है के ऐसे शर्मसार समाज द्वारा बनाई गई भूत पिशाच, डायन अथवा टोहनी जैसी कु—प्रथाओं का हमारे जीवन में मूल्य नहीं होना चाहिए। यह बताने का प्रयास किया है कि यह मानवीय समाज अंधविश्वास रूपी परम्पराओं के माध्यम से किसी भी एक पारिवारिक महिला का जीवन उजाड़ देती है। एक पालनहार महिला को आरोपित कर समाज में उसे यमराज की संज्ञा दे दी जाती है। इसके बावजूद उसके हृदय में छिपी मानवता एवं ममता को विलुप्त नहीं कर पाते। समाज द्वारा दी

गई पीड़ा, प्रताड़ना से ऊपर उठकर एक माँ निर्दोष लोगों की जान स्वयं के प्राण त्याग कर बचा लेती है। अंत में इस महान कार्य के लिए, चण्डी के मृत्यु उपरान्त सरकार द्वारा उसे सम्मानित किया जाता है जिसे भागीरथ स्वीकार करता है, अर्थात् लेखिका ने समाज द्वारा स्थापित अंधविश्वास परम्पराओं को झूठा प्रमाणित किया है।

बांयेन कहानी में बहिष्कृत समुदाय भी स्वयं के समुदाय की एक महिला को बहिष्कृत महिला जो एक बड़ी रेल दुर्घटना रोककर स्वयं के प्राण की आहुति देती है और जो रेल मे सवार बच्चों, महिलाओं, पुरूषों, बड़े बुजुर्गो के प्राण को बचाती है और वही समुदाय जिसने उस महिला को प्राण लेने वाली का दर्जा लेकर समाज से बाहर निकाल दिया था। इस हादसे के बाद स्वयं को ठगा सा महसूस करता है।

छत्तीसगढ़ राज्य में सामाजिक बुराईयों में सबसे बड़ी चुनौती टोहनी प्रथा है। छत्तीसगढ़ प्रदेश में किसी भी महिला को टोहनी कहकर प्रताड़ित किया जाता है। इसी सामाजिक बुराई के खिलाफ प्रदेश सरकार के द्वारा छत्तीसगढ़ विधान सभा में १९ जुलाई २००५ को टोहनी प्रथा उन्मूलन विधेयक २००५ पारित किया गया। इस टोहनी उन्मूलन कानून के तहत किसी भी महीला को टोहनी प्रताड़ना देने वाले व्यक्ति को ५ से १० वर्ष तक की सजा का प्रावधान है, और हत्या करने कीस्थिति में भारतीय दण्ड विधान की धारा ३०४ के तहत हत्या का मुकदमा चलाया जाता है। अंध श्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष डॉ दिनेश मिश्र द्वारा सूचना के अधिकार अधिनियम के तहत छत्तीसगढ़ शासन से जानकारी मांगी गई थी। जिस पर पुलिस विभाग द्वारा जानकारी दी गई कि वर्ष २००६ से वर्ष २०१७ तक इन ११ वर्षो में छत्तीसगढ़ प्रदेश में १३५७ महिलाएँ टोहनी के संदेह में प्रताड़ित की गई। उनकी समिति के द्वारा सरकार से टोहनी प्रताड़ना के मामले में दोषियों को जल्द सेजल्द सजा मिले। इसके लिए फास्ट ट्रेक कोट में सुनवायी की जाये, साथ ही प्रताड़ित महिलाओं को मुआवजा व पुर्नवास के लिए शासन स्तर पर योजना बनाने की मांग की गई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

१. अवस्थी, देवी, शंकर, नई कहानियाँ: संदर्भ और प्रकृति, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, १९७३

२. देवी, महाश्वेता, भारतवर्ष तथा अन्य कहानियाँ:, हरियाणा : आधार प्रकाशन, २००३,

३. माहेश्वर, महाश्वेता देवी की श्रेष्ठ कहानियां–, नई दिल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट, १९९३

४. शर्मा, बह्मदत्त, हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन, आगरा : सरस्वती प्रकाशन सदन, १९५८

५. डब्लू.डब्लू.डब्लू.आईबीसी२४.इन

❑❑❑

Jijnasa

ISSN : 0337-743X

भूख और गरीबी

डॉ सुरेखा जवादे

सहायक प्राध्यापक, सेंट थॉमस महाविद्यालय, भिलाई, छ.ग.

दो सौ वर्ष की गुलामी और बढ़ती हुई आबादी एवं आजादी के पश्चात् सम्पूर्ण देश प्राकृतिक आपदाओं के कारण भूख और गरीबी जैसी ज्वलंत समस्याओं का सामना कर रहा था। भोजन कुछ वर्ग तक ही सीमित था। बल्कि खाद्य सामग्री जरूरत से ज्यादा उनके पास थी। वही 1980 के दशक की आबादी भूखी थी। तब सामाजिक चेतना के लिए महाश्वेता देवी की कलम से बाढ़ जैसी कहानी निकलकर सामने आई। जो कि भूख के लिए आज तक प्रेरणा दायक कहानी है।

मानवीय प्रवृत्ति सदैव से ही अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए देव आराधना से जुड़ जाती है। इसी प्रवृत्ति को प्रमाणित करते हुए एवं पेट की ज्वाला से सम्बंधित बाढ़ कहानी लेखिका महाश्वेता देवी द्वारा उल्लेखित की है। बाढ़ कहानी के माध्यम से निर्धन एवं अनुसूचित जाति वर्ग की व्यथा को व्यक्त करने का जीवंत प्रयास किया गया है। कहानी का पात्र चीनिवास एक गाँव में विधवा अनुसूचित जनजाति की महिला का पुत्र है। इस परिवार के तीन सदस्यों में चीनिवास की माँ रूपसी व चीनिवास की दादी अर्थात् दो व्यस्क महिलाएँ व एक निर्भर बालक है। इस प्रकार से एक छोटे से परिवार में एक भी पुरुष नहीं है। जिसके कारण जीविकोर्पाजन के लिए इस गरीब परिवार को हरपल संघर्ष करना पड़ता है, अभाव ग्रस्त जीवन से चीनिवास त्रस्त हो चुका है। अपने खान–पान से संबंधित अभिलाषा को पूर्ण करने से उसे सदैव ही उत्सव एवं त्यौहारों का इन्तजार रहता है। धरा पर प्रत्येक प्राणी के लिए भोजन अनिवार्य है। बिना भोजन के जीवन की कल्पना नही की जा सकती एक भूखा व्यक्ति भोजन प्राप्ति के लिए मान सम्मान को एक कोने में रख कर हर प्रकार से प्रपंच करता है। मुख्य पात्र चीनिवास गरीबी एवं भूखमरी से त्रस्त था। स्वादिष्ट भोजन प्राप्ति के लिए दर–दर भटकता है।

त्यौहार के संदर्भ में बताया गया है कि बंगाल मे समृद्धशाली व निर्धन वर्ग दोनों ही अपने अराध्य को पूजते हुए मनोकामना पूर्ति हेतु आराधना करते है। इसी त्यौहार की आड़ में चीनिवास अपने भूख की तृष्णा को मिटा पाने का हर संभव प्रयास कर रहा है। अपनी माँ से गत्वर्ष का हवाला देते हुए, त्यौहार मनाने के लिए विनन्ती कर रहा है। उसकी माँ अपनी निर्धन परिस्थितियों को छिपाते हुए, रिश्तेदार की मौत के संदर्भ में इस वर्ष त्यौहार नहीं मना पाने का बहाना बनाती है। चीनिवास अपनी भूख रूपी तृष्णा को नियंत्रित नहीं कर पाता है। उसे दादी द्वारा बाढ़ के दौरान सुनाई गई कहानी याद आती है। बाढ़ रूपी संकट के घड़ी में पूरे गाँव में ऊँच और नीच का भाव स्वमेव समाप्त हो जाता है। मानवता की जीत होती है। सवर्ण एवं निची जाति के लोग एक ही सुरक्षित स्थान पर पनाह लेते है। यहाँ तक कि भोजन भी एक साथ ग्रहण करते है। गाँव के सभी समृद्धशाली वर्ग के जमींदार एवं साहूकार द्वारा संकट की इस घड़ी में सभी ग्रामीणों को विशेष पकवानों के साथ भोजन कराया जाता है।

ISSN : 0337-743X

बागदीनी का पुत्र चीनिवास जो बहुत ही गरीब दरिद्र परिवार से था। जिसे कभी भी बहुत अच्छा भोजन तो दूर पेट भरने के लिए माँ व दादी बहुत मुश्किल से अन्न जुटा पाते थे। कभी उसे अच्छा भोजन मिल जाये इस आस में वह दर–दर भटकता गाँव के ब्राह्मण सामंत परिवार के घर से आ रही भोजन की खुशबू उसे दरवाजे तक खींच लाती है और वह बाहर खड़े–खड़े ही उस खुशबू से अंदाज लगाता है कि ब्राह्मण लोग भात में बहुत अधिक मात्रा में घी का प्रयोग करते है। लौकी की सब्जी दूध डालकर पकायी जाती है। मूली, बड़ी और नारियल को मिला कर अच्छी सब्जी बनाई जाती है ।

चीनिवास सोचता है कि लम्बा अरसा बीत गया। मुझे कभी चावल तक नसीब नहीं हुआ। किसी ब्राह्मण ने भी उसे भोजन नहीं करवाया। इसलिए वह ब्राह्मण परिवार के बिना आदेश के उनके घर पहुँचकर कार्य करने के लिए मनसा का पेड़ लेकर देने की इच्छा जाहिर करता हैं लेकिन पंड़िताईन उसे साफ इंकार कर चले जाने को कहती हैं। अधूरी इच्छा लिए चीनिवास घर वापस आ जाता है। जब चीनिवास पंड़िताईन को आवाज लगाकर माँ–माँ पुकारता है और कहता है जग लाकर दूँ क्या ? क्रोधित होकर पंडिताईन उसे जाने के लिए कहती है। चीनिवास के द्वारा बार–बार माँ का सम्बोधन पंडिताईन के हृदय को जला रहा था। लेकिन चीनिवास की मजबूरी थी पेट की आग कितना भी अपमान क्यों नहीं हो किसी तरह शांत हो जाये पूरे गाँव में रूपसी बगदीनी की तरह कोई गरीब न था। वह अपने पुत्र को पेट भर भोजन तक नहीं करा पाती थी। अधूरी वेशभूषा सिर पर बालों की वहीं जटाये होने के बावजूद चीनिवास का स्वरूप देखते ही बनता था। वही समृद्धशाली ब्राह्मण परिवार को कितना ही मन्नतो देवी पूजा आराधना के बाद भी पुत्र नसीब नहीं था। बेटा नसीब नहीं था इसी कारण ब्राह्मण ने दूसरा विवाह किया था। जिससे उन्हें पुत्र रत्न भी प्राप्त हुआ लेकिन वह सदैव बीमार रहता था। ब्राह्मण परिवार के घर पर किसी को आने की अनुमति नहीं थी, आंगन से थोड़ी दूरी पर लक्ष्मण रेखा बना दी गई थी। पूरे ग्रामीण उसी रेखा से दूर खड़े होकर पुकार लगाते थे।

भूख समाज के किसी भी प्राणी को परेशान करती है। भूख को शांत करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति सभी सीमाओं को लांघ सकता है। लेखिका ने कहानी में एक ही समाज में दो वर्गो का उल्लेख किया है जिसमें एक वर्ग जिसके पास सम्पूर्ण खाद्य सामग्री है और इच्छा के अनुरूप उपलब्ध सामग्री में से चयन कर उसका भोग कर सकता है। जबकि दूसरा ऐसा वर्ग है जो सम्पन्न वर्ग की झूठन प्राप्त करने के लिए दर–दर भटकता है। इस दशक में लिखी गई कहानी की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। हमारे देश की आबादी के बहुत बड़े हिस्से को भोजन नहीं मिल पाता है। भूख एवं कुपोषण से मुकाबला करने के लिए केन्द्र राज्य एवं स्थानीय प्रशासन द्वारा भूखो तक भोजन पहुंचाने के लिए कई–कई सरकारी योजनायें चलायी जा रही है। इसके बावजूद भी भोजन नहीं मिलने के कारण हर वर्ष कई लोगो की मौत हो रही है।

दो सौ वर्ष की गुलामी और बढ़ती हुई आबादी एवं आजादी के पश्चात् सम्पूर्ण देश प्राकृतिक आपदाओं के कारण भूख और गरीबी जैसी ज्वलंत समस्याओं का सामना कर रहा था। भोजन कुछ वर्ग तक ही सीमित था। बल्कि खाद्य सामग्री जरूरत से ज्यादा उनके पास थी। वही 1980 के दशक की आबादी भूखी थी। तब सामाजिक चेतना के लिए

ISSN : 0337-743X

महाश्वेता देवी की कलम से बाढ़ जैसी कहानी निकलकर सामने आई। जो कि भूख के लिए आज तक प्रेरणा दायक कहानी है।

चीनिवास अपनी दादी से गाँव में वर्षो पूर्व आयी बाढ़ के वृतान्त को सुनना चाह रहा था। बच्चे द्वारा लगातार की जा रही जिद को पूरी करने के लिए दादी ने बाढ़ की घटना को सुनाना शुरू किया और बताया की परेशानी की इस घड़ी में चारो ओर नदी में पानी भर गया। पशुओं और आदमी इस धार में बहकर मर रहे थे। सभी अपने जीवन को बचाने के लिए ऊँचा स्थान ढुंढ रहे थे। कई लोग पेड़ पर चढ़ कर अपने प्राणो की रक्षा में लगे थे। जीवन एवं मृत्यु के इस संघर्ष को देखकर समृद्धशाली ब्राह्मण वर्ग द्वारा नीची जातियों को कभी अपने घर के आंगन में प्रवेश तक नहीं करने दिया जाता था। उन्हीं पीड़ितों को ऊँचे स्थान पर स्थापित अपने घर के आंगन में आश्रय दिया।

सुरक्षित जगह हेतु आश्रय देना जीवन की रक्षा के लिए काफी न था। बिना भोजन पानीके लोगों की मौत हो रही थी। ब्राह्मण वर्ग के बोरो में भरा हुआ चुवड़ा, भुजा और बताशा सभी को दिया गया। जिन लोगों को खाना बनाने के लिए जगह मिल गई थी। उन्हें चावल एवं दाल दी गई ताकि वे भोजन कर अपने प्राणों की रक्षा कर सके। बाढ़ रूपी इस प्राकृतिक आपदा ने बरसो पूर्व धर्म के आधार पर स्वर्ण एवं निचली जाति के मध्य भेदभाव, छुआछुत की रूढ़ीवादी परम्पराओं की खाई को पाट दिया था। जो स्वर्ण जातियाँ इन निचली जाति की प्रथा को पीने का पानी तक तालाबों एवं कुओं से भरने नहीं देते और जो मंदिरों में देव दर्शन से वंचित रखते थे। आज वे ही ब्राह्मण जाति के लोग इन नीच जाति के लोगों को मुसीबत की घड़ी में प्राणों की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा कर मानवता का सबसे बड़ा उदाहरण प्रस्तुत कर रहे थे।

आचार्य जी के घर के सामने आमंत्रित पूरा गाँव साधू–सन्यासियों के दर्शन के लिए आतुर बैठे थे। काफी देर तक साधु–संतो के नहीं आने पर भी सभी लोग इंतजार कर रहे थे। साधु–संतो के दर्शन की अपेक्षा लोगो को अपनी भूख शान्त करने की ज्यादा चिंता थी। इसलिए साधु–संतो के आने और न आने का उनके लिए महत्व नहीं था। वो तो इस समारोह की आड़ में वितरित होने वाले प्रसाद प्राप्ति का इन्तजार कर रहे थे। पेट की भूख से बढ़कर और कुछ नहीं होता है। पेट भर खाने के लिए माँ, बेटे, बुजुर्ग, महिलाओं, पुरूष, बच्चे, विकलांग सभी बैठे रहे उसी दौरान जोरदार वर्षा होने लगी। पानी में भीगते हुए लोग अपने आराध्य से प्रार्थना करने लगे की और जोरदार वर्षा हो जाये। ऐसे ही पानी के प्रभाव में बाढ़ आती है और पुनः बाढ़ की स्थिति बनने पर पिछली बार की तरह उन लोगों को प्रसाद जरूर प्राप्त होगा।

दिन भर बरसते पानी में इंतजार करने के बाद भीड़ शाम तक डटी रही। तभी आचार्य के नौकर पहुंचे और सभी से विन्रम आग्रह करते हुए नौकर ने कहा कि साधुसंत नहीं पहुँच पाये इसलिए अब आप लोग लौट जाओ। यहाँ खड़े रहकर समय व्यतीत करने से कोई लाभ नहीं मिलने वाला प्रसाद के रूप में नौकरों के द्वारा बताशे का वितरण किया जा रहा था। इस पर गाँव वालों ने पूछा कि साधु–संतो के गाँव नहीं पहुंचने पर बताशे क्यों बाँटे जा रहे है? प्रसाद मिलेगा इसका वादा किया गया था। इस कारण इसका वितरण किया जा रहा है। यदि साधु–संत पहुंचते तो निश्चित ही प्रसाद बंटता और

ISSN : 0337-743X

कीर्तन भी होते। आप सभी को महाप्रसाद भी खाने को मिलता इसके लिए आचार्य जी ने सारी व्यवस्था की थी। महाप्रसाद बनाने के लिए सभी सामग्री की खरीदी भी की गई थीकिन्तु साधु–संतो के नहीं आने के कारण प्रसाद नहीं बनाया गया इसलिए जो मिल रहा है वो ले लो। इसपर लोगों ने कहा कि हम भोजन करने की आशा पर आये थे। तब नौकरों ने कहा कि तुम सब की बाते सुनने से लगता हैं कि सन्यासी के दर्शन के लिए नहीं अपितु खाना खाने के उददेश्य से आये थे। नौकर ने खीज कर कहा कि जो मिल रहा है ले लो। मैं तुम लोगों के साथ बहस नहीं कर सकता क्योंकि तुम लोगों के लिए संयासी दर्शन से ज्यादा महत्वपूर्ण भोजन प्राप्त करना है। संयासी की अपेक्षा भोजन बड़ा हो गया है और यही कारण है कि तुम लोगों का दुख कभी समाप्त नहीं होगा, भुजा बताशा लो और जाओ यहाँ से। महाश्वेता देवी यही बात कहना चाहती है कि भूखे को भोजन दे कर जिंदा रखने से बड़ा कोई आदर्श, कोई धर्म नहीं हो सकता।

निष्कर्ष

प्रथम दो विश्व युद्ध विश्व में साम्राज्य स्थापित करने के उद्देश्य से हुए थे। परन्तु बुद्ध जीवियों का मत है कि भविष्य में होने वाला तृतीय विश्व युद्ध भूख और पानी के लिए ही होगा। महाश्वेता देवी ने बांढ़ कहानी में भूख की व्यथा को बड़े ही मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है। गरीब, निर्धन और जरूरत मंद वर्ग को एक जून की रोटी प्राप्त करने के लिए लगातार संघर्ष करना पड़ता है। आज भी हमारे देश में रोज लगभग बीस करोड़ लोगो को भोजन प्राप्त नहीं होता। ऐसे अभागों को खाली पेट ही सोना पड़ता है हजारो लाखो बच्चे कुपोषण का शिकार है कुपोषण के शिकार मासूमो को बाल्यावस्था में भी शरीर के कई अंगो को खोना पड़ जाता है। सरकार से पेट की इस ज्वाला को शांत करने के लिए कारगार उपाय करना चाहिए। ताकि चीनिवास जैसे भूखे बालक को मौत का तांडव लेकर आने वाली बाढ़ को पुनः आमंत्रित करने के लिए अपने अराध्य से प्रार्थना न करना पड़े। ये उन लोगो के लिए भी संदेश है जो वर्ग अपनी भूख से ज्यादा भोजन करते हैं। पेट की ज्वाला को बिना जाने समझे अत्यधिक मात्रा में भोजन या खाद्य सामग्री को बर्बाद करते है। इस देश का प्रत्येक नागरिक पूरजोर ध्यान दे कि यह बर्बाद किये जाने वाला खाद्य सामग्री हजारों लाखो, भूखे बच्चे, बुजुर्गों, महिलाओं के भूख को मिटा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ–

माहेश्वर– महाश्वेता देवी की श्रेष्ठ कहानियाँ, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 1993
देवी महाश्वेता – ईट के ऊपर ईट, दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन 2008
देवी महाश्वेता – भारत वर्ष की अन्य कहानियाँ, कोलकत्ता
देवी महाश्वेता – महाष्वेता देवी की श्रेष्ठ कहानियाँ, भारतीय ग्रंथ अकादमी

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

June 2021, Issue-03, Vol-01

अतिथि संपादाक :

१. डॉ. राठोड अनिलकुमार

२. डॉ. शिवशेट्टे गोविंद

३. डॉ. भगवान कदम

४. डॉ. शिंदे प्रकाश

५. डॉ. शेख मुखत्यार

६. डॉ. वारले नागनाथ

७. डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Printing Area

www. विद्यावार्ता® .कॉम

YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyavarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats).

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT 7.891 iijif FACTOR

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 3418002

http://www.printingarea.blogspot.com

है। वडार समाज आर्थिक दृष्टि से भी बहुत पिछडा हुआ है। ना खेती, ना व्यापार गधे, गाय, भैंस, सुअर, मुर्गा, बकरियाँ, कुत्ते आदि जानवर ही उनकी संपति है। खदानों से पत्थर निकालकर तोडना या जमीन से मिट्टी खोदकर ढोना यही उनकी रोजी रोटी का साधन है। वडार स्त्री—पुरूष मेहनत से जो कमाते है वह नशा—पानी में डाल देते है। इस दुष्टचक्र से उसे बाहर निकालना असंभव तो नहीं लेकिन बहुत मुश्किल है। वडार समाज संस्कशति और सभ्यता की दुनिया से कोसों दूर है।

संक्षेप में वडार बहुत ही मार्जिनल समाज है, जिसको न गाँव के छोर का आधार है ना जंगलों के आँचल का सहारा। इस प्रकार शिक्षा, सभ्यता तथा अर्वाचीनता से दूर घोर अंधकार में सदियों से रहनेवाली वह एक आदिम जाति है।

संदर्भ सूचिः—

१. डॉ. वी.एन. भालेराव—बोलियाँ समाज और संस्कृति २०

२. भारतीय संस्कृति कोश खंड ८

३. डॉ. बापूराव देसाई—भारत की २५ बोलियों का सप्रयोग लोक साहित्य ३०१

४. डॉ. वी.एन. भालेराव—बोलियाँ समाज और संस्कृति ३०१

५. कवि निरालाजी—वह तोडती पत्थर

६. डॉ. वी.एन. भालेराव—बोलियाँ समाज और संस्कृति १०४

७. डॉ. बापूराव देसाई—भारत की २५ बोलियों का सप्रयोग लोक साहित्य ३०१

८. डॉ. बापूराव देसाई—भारत की २५ बोलियों का सप्रयोग लोक साहित्य ३०२

९. डॉ. बापूराव देसाई—भारत की २५ बोलियों का सप्रयोग लोक साहित्य ३०३

❑❑❑

95

मानवीय संवेदना को परास्त करती क्षुधा

डॉ. सुरेखा जवादे

सहायक प्राध्यापक,

सेंट थॉमस महाविद्यालय भिलाई, छ.ग.

****

मानवीय प्रवृत्ति सदैव से ही अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए देव आराधना से जुड़ जाती है। इसी प्रवृत्ति को प्रमाणित करते हुए एवं पेट की ज्वाला से सम्बंधित कहानी बाढ़ लेखिका महाश्वेता देवी द्वारा रचित है। कहानी के माध्यम से निम्न वर्ग की संवेदनाओं को व्यक्त किया गया है। देश की स्वतंत्रता के साथ सबसे बड़ी समस्या भूख है। सम्पूर्ण आबादी की भूख रूपी तृष्णा को शांत करने की चुनौती शासन तंत्र की रही है।

पश्चिम बंगाल के एक छोटे से गाँव मे चीनिवास विधवा अनुसूचित जनजाति की महिला का पुत्र है। इस परिवार के तीन सदस्यों में चीनिवास की माँ रूपसी व चीनिवास की दादी अर्थात् दो व्यस्क महिलाएँ व एक निर्भर बालक है। इस प्रकार से एक छोटे से परिवार मे एक भी पुरूष नहीं है। जिसके कारण जीविकोपार्जन के लिए इस गरीब परिवार को हर—क्षण संघर्ष करना पड़ता है। अभाव ग्रस्त जीवन से चीनिवास त्रस्त हो चुका है,उसे अपने खान—पान से संबंधित अभिलाषा को पूर्ण करने के लिए सदैव ही उत्सव एवं त्यौहारों का इन्तजार रहता है। इच्छाओं को पूरा करने के लिए प्रत्येक निर्धन व्यक्ति अपने अराध्य को विधि ा—विधान से पूज कर विनन्ती करता है। परम्परा के अनुसार पश्चिम बंगाल के इस गाँव में मनसा नामक वृक्ष की पूजा सम्पूर्ण विधि—विधान से ग्रामीणों द्वारा की जाती है। इसके लिए गृहस्थ्य परिवार घर के आंगन में मनसा का पेड़ लगाकर पूजा अर्चना करते है और अपने आराध्य से मन्नत के रुप में घर, खेत पशु,

दूध, नवविवाहित के गोद में पुत्ररत्न व तलाबों में मछलियों की मांग करते हैं। लेखिका ने बाढ़ कहानी के माध्यम से निम्न वर्ग की संवेदनाओं को व्यक्त किया है। कहानी का मुख्य पात्र चीनिवास जो मनसा का पेड़ अपने आंगन में लगाने के लिए पेड़ की खोज में घुमता है और पूजा के दौरान यह मान्यता है कि मनसा के पेड़ से जो कोई कुछ भी माँगेगा उसकी मनोकामना मनसा का पेड़ अवश्य पूरी करेगा। इस प्रथा को मानने वाले वर्ग में कोई अपने लिए घर मांगता है तो कोई गाय के थन में दूध, कोई पोखरे मे मछलियाँ, तो कोई बहुओं की गोद में बेटा। लेकिन यह जरूरी नहीं की हर घर में मनसा का पेड़ हो। त्यौहार के संदर्भ में बताया है कि बंगाल में समृद्धशाली व निर्धन वर्ग दोनों ही अपने अराध्य को पूजते हुए मनोकामना पूर्ति हेतू आराधना करते है। इस त्यौहार कि आड़ में चीनिवास अपने भूख की तृष्णा को मिटा पाने का हर संभव प्रयास कर रहा है। चीनिवास माँ से गत् वर्ष का हवाला देते हुए, त्यौहार मनाने के लिए विनन्ती कर रहा है। परन्तु माँ अपनी निर्धन परिस्थितियों को ढ़कते हुए, अपने रिश्तेदार की मौत के संदर्भ में इस वर्ष त्यौहार नहीं मना पाने का बहाना बनाती है।

एक ओर चीनिवास अपनी दादी से बाढ़ की कहानी सुनाने के लिए जीद करता है। चीनिवास के आग्रह को स्वीकार करते हुए उसकी दादी बाढ़ कहानी सुनाते हुए कहती है कि परेशानी की इस घड़ी में चारो ओर नदी में पानी भर गया। पशुओं और आदमी इस धार में बहकर मर रहे थे। सभी अपने जीवन को बचाने के लिए ऊंचा स्थान ढुंढ रहे थे। कई लोग पेड़ पर चढ़ कर अपने प्राणो की रक्षा में लगे थे। जीवन एवं मृत्यु के इस संघर्ष को देखकर समृद्धशाली ब्राह्मण वर्ग द्वारा नीची जातियों को कभी अपने घर के आंगन में प्रवेश तक नहीं करने दिया जाता था। उन्हीं पीड़ितों को ऊँचे स्थान पर स्थापित अपने घर के आंगन में आश्रय दिया गया। लेखिका ने उल्लेखित किया है कि सभी प्राणी एक समान है। परन्तु समय के बदले हुए परिवेश एवं प्राकृतिक आपदा से उत्पन्न परिस्थितियाँ मानव द्वारा निर्मित मदभेद उत्पन्न करने वाली दिवारों को ध्वस्त कर देती है। जिन लोगों को सारी उम्र उपेक्षा का दंश झेलना पड़ता था। आज उन्हें ही आगंतुक की भांति सेवा प्राप्ति का अवसर मिल पाया है।

दूसरी ओर गाँव के सबसे बड़े ब्राह्मण आचार्य द्वारा भेजा गया निमंत्रण ढोल बजा कर उनके संदेश वाहको के द्वारा ग्रामीणों तक पहुँचाया जा रहा था। मुनादी से ग्रामीणों को बताया जा रहा था कि बड़े आचार्य जी के घर पर कीर्तन होगा देवी—देवताओं की पूजा होगी। इसके बाद प्रसाद का वितरण सभी लोगों के मध्य किया जायेगा और इस के पश्चात् आचार्य जी के घर आने वाले साधु संतो के सभी लोगों को दर्शन लेने एवं आशीर्वाद लेने का अवसर प्राप्त होगा। इस आयोजन में सभी को निमंत्रण है। ऊँचे और निचली जाती के साथ कोई भेदभाव नहीं होगा। ब्राह्मण एवं बागदी सभी इस समारोह में शामिल हो सकते हैं। इस निमंत्रण को पाकर चीनिवास की दादी आश्चर्य चकित हो जाती है। सभी को खाना दिया जायेगा। यह प्रश्न चीनिवास अपनी दादी से कहता है, सिर हिलाकर दादी चीनिवास को सहमती प्रदान करती है। लगता है कि यह समारोह भी गंगा की बांढ़ की तरह ही होगा जहाँ सभी लोग एक साथ बैठकर भोजन करेंगें। चुड़ा और भुजा बांट कर खायेंगें। लेकिन खाना—खाने की अभिलाषा के कारण चीनिवास चुड़ा एवं भुजा तक सीमित नहीं रहना चाहता वह आगे होकर दादी से कहता है कि नहीं दादी इस समारोह में भात पकेगा, दाल में घी मिलाया जायेगा और नारियल के साथ कुमड़े की सब्जी भी होगी एवं ग्वाले की महिलाओं ने इस समारोह में बहुत अधिक मात्रा में दही भी बनाया है जो समारोह मे शामिल होने वाले लोगों को खाने के सभी व्यंजनों के साथ परोसा जायेगा।

समारोह में शामिल होने के लिए चीनिवास अपने माँ रूपसी को संदेशा देता है तथा उसकी दादी समारोह में शामिल होने के लिए तैयारी करती है। तीनों ही आचार्य के घर की ओर चल पड़ते है। रूपसी को महसूस होता है कि चैतन्य प्रभु गौरांग आ गये। इसलिए अपनी संतान की सारी इच्छायें पूरी होना का आभास होता है और वो अपने भूखे पुत्र चीनिवास को प्यार करते हुए करुणावश छाती से लगा लेती है। उसे एक पल महसूस हुआ कि उसके सारे दुखो का

निराकरण हो गया। आज उसके पुत्र की भोजन की लालसा प्रसाद प्राप्ति के बाद पूरी हो जायेगी। लेकिन गौरांग साधू—संत समारोह में नहीं पहुंचे। आचार्य जी के घर के सामने आमंत्रित पूरा गाँव साधू—सन्यासियों के दर्शन के लिए आतुर बैठा था। काफी देर तक साधु—संतो के नहीं आने पर भी सभी लोग इंतजार कर रहे थे। साधु—संतो के दर्शन की अपेक्षा लोगो को अपनी भूख शान्त करने की ज्यादा चिंता थी। इसलिए साधु—संतो के आने और न आने का उनके लिए महत्व नहीं था। वो तो इस समारोह की आड़ में वितरित होने वाले प्रसाद प्राप्ति का इन्तजार कर रहे थे। पेट की क्षुधा से बढ़कर और कुछ नहीं होता है। उसी दौरान जोरदार वर्षा होने लगी। पानी में भीगते हुए लोग अपने आराध्य से प्रार्थना करने लगे की और जोरदार वर्षा हो जाये। ऐसे ही पानी के प्रभाव में बाढ़ आती है और पुन: बाढ़ की स्थिति बनने पर पिछली बार की तरह उन लोगों को प्रसाद जरूर प्राप्त होगा।

यह बताने का प्रयास किया गया है कि भूख और गरीबी के सामने मौत भी कोई मायने नहीं रखती। वरना वह बालक चीनिवास अपनी भूख शांत करने के लिए बांढ़ को कभी आमंत्रण नहीं देता। मानवीय समाज की सर्वाधिक अनिवार्य आवश्यकता पेट की भूख को मिटाना होता है। मानव अपने सम्पूर्ण जीवनकाल का अधिकांश समय रोटी की व्यवस्था में गुजरता है। देश के सबसे बड़े ज्वलंत विषय को उठाते हुए लेखिका ने शासन को इस दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। आजादी के ७४ वर्ष बाद भी ये समस्या आज भी कायम है। यह चुनौती शासन तन्त्र के लिए बनी हुई है। प्रति दिन इस देश का पाँचवा नागरिक भूखे रहता है। भूख के कारण प्रतिवर्ष लाखों लोगों की मौत का सिलसिला बरकरार है। इस कहानी के मुख्य पात्र चीनिवास की भूख इस देश के हर बच्चे की भूख की तृष्णा के समान है। इसलिए शासन तंत्र को पूरी ताकत के साथ इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। महाश्वेता देवी की कहानियाँ आज भी प्रासंगिक है। केन्द्र सरकार, राज्य सरकार एवं स्थानीय सरकार अपने—अपने संसाधनों का भरपूर प्रयोग करते हुए देश के नागरिकों को दो जून की रोटी उपलब्ध कराने के लिए प्रतिवर्ष नई—नई योजनाएं बना रही है। बालवाड़ी आंगनवाड़ी, स्कूल एवं पीडीएफ योजना उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है। भोजन का प्रकार सुखा राशन एवं पका हुआ भोजन दोनों ही है। जहाँ पीडीएफ योजना के तहत वितरित बीपीएल कार्ड धारी परिवारों को नि:शुल्क राशन उपलब्ध कराया जा रहा है वहीं मध्यान भोजन योजना के तहत पूरे देश में शासकीय प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में आने वाले प्रत्येक विद्यार्थी को दोपहर का भोजन शासन तंत्र वितरित कर रहा है ताकि कोई भी बालक कहानी के मुख्य पात्र चीनिवास के भांति भूख की तृष्णा के लिए हर—पल हर—क्षण व्याकुल ना रहे।

निष्कर्ष

इस समस्या पर विजय प्राप्त करना आवश्यक है। प्रतिवर्ष देश में भूखे सोने वालो में वृद्धि होती रही है। इसे ध्यान में रखते हुए गंभीर विषय को अपने रचना संसार में स्थान दिया। उनके द्वारा आदिवासी समुदाय के मध्य रहते हुए भोजन की व्यवस्था के लिए किये जाने वाले कठिन प्रयासों को देखा है। भोजन के लिए चीनिवास की तड़प को कहानी के माध्यम से दर्शाया है। भूख की मजबूरी के कारण उसे मौत रूपी बाढ़ अच्छी लगती है। इस कहानी के महत्व को संयुक्त राष्ट्र संघ की वार्षिक रिपोर्ट से सपष्ट किया जा सकता है। इस रिपोर्ट के मुताबिक भारत देश भूखमरी का शिकार है। संयुक्त राष्ट्र के खादय एवं कृषि संगठन ए.एफ.ओ ने अपनी रिपोर्ट में द स्टैट आफ फुड इनसिक्युरिटी द वर्ल्ड २०१५ में विश्व स्तर पर भूखे लोगों की संख्या घट कर ७९ करोड़ होना बताया है।जबकि वर्ष १९९०—९२ में भूखे लोगों की संख्या विश्व स्तर पर एक अरब थी। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि पच्चीस वर्षो में विश्व स्तर पर व्यापक पैमाने पर कार्य किया गया।जिसके करण २० प्रतिशत की गिरावट आई है परन्तु भारत में १९९०—९२ में भूखे लोगों की संख्या २१ करोड़ थी। २०१४—१५ में घट कर १९ करोड़ ४६ लाख रह गई। सम्पूर्ण विश्व के ७९ करोड़ में से २० करोड़ लोग भारतीय है। विश्व स्वास्थ्य संगठन विश्व की साढ़े छह अरब

9/12/22, 2:00 PM IMG-20220906-WA0009.jpg

जि ज्ञा सा

JIJÑĀSĀ

A Journal of the History of Ideas & Culture

Vol. 38 No. 3 2021-2022

A JOURNAL OF THE HISTORY OF IDEAS & CULTURE

जि ज्ञा सा

Department of History and Indian Culture
University of Rajasthan, Jaipur, India

https://mail.google.com/mail/u/0/#sent?projector=1 1/1

Jijñāsā : A Journal of the History of Ideas and Culture
Vol. 38 No. 3 2021-2022

Editor :**Dr. Pramila Poonia**

A Peer-reviewed/Refereed National journal
ISSN: 0377-743-X

Editorial Advisory Board

Prof. S.N. Dubey, Jaipur
Prof. Sia Ram Dubey, Varanasi
Prof. 1.K. Sharma, Chandigarh
Prof. SusmitaPande, Bhopal
Prof. Vibha Upadhyaya, Jaipur.

Publishes by

Department of History and Indian Culture
University of Rajasthan
Jaipur-302004, INDIA
Website: dhicuor, ac.in
Email, hodhistoryuoregmall.com Published by

Printed by
Literary Circle

Jijnasa

ISSN : 0337-743X

सामाजिक अव्यवस्थाओं का दर्पण : महाश्वेता देवी का साहित्य

डॉ. सुरेखा जवादे

सहायक प्राध्यापक, सेन्ट थॉमस कॉलेज, भिलाई, (छ.ग.)

पन्द्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालीस को विभाजित राष्ट्र भारत के स्वतन्त्र होने पर हमारे देश में अनेक समस्याओं ने पैर पसारे। साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष समाप्त हो गया था। लेकिन अनेक समास्याएँ जिन्हें अंग्रेज छोड़ गए थे, उनका सामना देश को करना पड़ा। ऐसे में साहित्यकारों, रचनाकारों, कवियों एवं पत्रकार समुदाय की भूमिका मार्गदर्शक बनकर प्रशासन के सामने आई। अपने लेखों एवं रचनाओं में समाज, देश हित एवं निर्माण के लिए आवश्यक विषय को शामिल किया गया। जिससे की एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण हो सकें।

किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा राष्ट्र के निर्माण में वे सभी आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितयाँ जिम्मेदार होती हैं, जिनके बीच से उसे अपने अस्तित्व का मार्ग खोजना पड़ता हैं।बंगाल की साहित्यकार महाश्वेता देवी भी ऐसी ही साहित्यकार है, जिन्होंने रचनाओं के माध्यम से समाज एवं राष्ट्र निर्माण में अपनी अग्रणी भूमिका अदा की। समाज की मुख्यधारा से अनभिज्ञ आदिवासी समुदाय के साथ वर्षो तक बिहार और बंगाल के घने कबाइली इलाकों में रही हैं, उन्होंने अपनी रचनाओं में इन क्षेत्रों के अनुभव को अत्यंत प्रामाणिकता के साथ उभारा है। महाश्वेता देवी एक थीम से दूसरी थीम के बीच भटकती नहीं हैं। उनका विशिष्ट क्षेत्र है दलितों और साधनहीनों के हृदयहीन शोषण का चित्रण और इसी संदेश को वे बार–बार सही जगह पहुँचाना चाहती हैं ताकि अनन्त काल से गरीबी–रेखा से नीचे साँस लेनेवाली विराट मानवता के बारे में लोगों को सचेत कर सकें। महाश्वेता देवी की रचनाएं बंगला साहित्य तक सीमित न रह कर अन्य भाषओं में भी अनुदित है। महाश्वेता देवी की रचनाओं का लौह हिन्दी साहित्य ने भी माना है।

महाश्वेता देवी की लेखन शैली केवल बंगाल तक ही सीमित नहीं रही अपितु वह बंग्ला साहित्य की सीमाओं को लांघकर अन्य राज्यों के साहित्य में सीधा प्रवेश कर गई है। उनकी कहानियों में जीवंतता होने के कारण उनकी रचनाएं हिन्दी साहित्य के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं में अनुदित होकर पाठकों तक पहुंची है। समाज में सुधार एवं सामाजिक चेतना ही उनके लेखन शैली का विषय है। उनकी रचनाओं में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक क्षेत्र की अव्यवस्था प्रमुख है। महाश्वेता देवी द्वारा अपनी कहानियों में उठाये गये मुद्दों में महिला उत्पीड़न, आदिवासियों के मूलभूत अधिकार, भूख, गरीबी, सामाजिक कु–प्रथाऐं, विधवा–विवाह, अंधविश्वास, काम–काजी महिलाओं का शरीरिक शोषण, वर्णव्यवस्था, युवा वर्ग में भटकाव आदि क्षेत्रों में शासन–प्रशासन एवं समाज को विस्तृत रुप से आज भी कार्य करने की आवश्यकता है। उनकी रचनाएं सामाजिक अव्यवस्था के आस–पास ही केन्द्रित रही। उनकी प्रत्येक रचना समाज में संदेश वाहक का कार्य करती है। अव्यवस्था को उजागर करने के कारण सदैव से उनकी रचना को एक मार्गदर्शक के रूप में देखा जाता रहा है।वे अपनी रचनाओं में अनुभव को अत्यंत प्रामाणिकता के साथ उभारती है। उन्हीं की रचना के आधार से फिल्म जगत भी अछूता

9/12/22, 2:00 PM IMG-20220906-WA0013.jpg

ISSN : 0337-743X

नहीं रहा है। फिल्म जगत् को भी उनकी रचनाओं में विषय नजर आने पर रूदाली, संघर्ष, 1084 की माँ आदि फिल्म का निर्माण किया गया। फिल्म रूदाली में समाज के सामंत वर्ग द्वारा निचली जाति के लोगों के साथ किये गये शोषण को बड़ी ही मार्मिकता से दर्शाया गया है। महाश्वेता देवी ने फिल्म रूदाली में भारतीय समाज में व्याप्त जाति व्यवस्था को समाज के उस दायरे में लाकर खड़ा कर दिया है। जहां मानव प्रगति के सभी रास्ते ही बंद कर दिये हो।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था इस आधुनिक काल में भी पिछडी जातियों में विभक्त है भले ही सख्त कानून के भय से इसका प्रदर्शन खुले आम देखने को नहीं मिलता परन्तु सामन्त वर्ग के ह्रदय में ये देश आज भी पनपता है। आज भी राजस्थान प्रदेश की खाप पंचायते तुगलगी आदेशों के लिए जग प्रसिद्ध है। रूदाली कहानी भी हमारे देश के राजस्थान प्रान्त से है जहाँ वर्ण व्यवस्था के तहत सुविधाभोगी ऊंची कहलाने वाली जातियाँ है तो दूसरी ओर जीवन की मूलभूत आवश्यकता से जूझती तथा कथित नीची जातियाँ। इन्हीं नीची कहलाने वाली जातियों में एक जाति है रूदाली। इसी जाति विशेष को अपनी रचना में उभारा है।

भारत वर्ष कहानी में लेखिका ने वर्णन किया है किअटाई गाँव सूर्योदय की रोशनी के साथ उठने एवं सूर्य देवता के डूबने के साथ सो जाता है। अत्यधिक पिछडेपन का शिकार अटाई गाँव विकास की रोशनी से कोसो दूर है। भारत में यह परिस्थिति किसी एक गाँव के साथ नहीं बल्कि हजारों गाँव में इन्हीं हालातो का सामाना ग्रामीणों को करना पड़ता है। रात्रि के समय प्रकाश व्यवस्था के रुप में मिट्टी तेल की ढिबरी या लालटेन ही एक मात्र सहारा रहता है। इस गाँव की आबादी आसपास के टोले को मिलाकर तीन सौ के लगभग थी। पलामू में जानवरों के रूप में सौ बकरियों के करीब और कुछ मुर्गीयाँ थी। इस अभाव ग्रस्त गाँव में आदिवासियों को एक गाय तक नसीब नहीं थी। पूरे गाँव में तीन लोगों के पास ही टार्च था। वस्त्रों में फूल पेन्ट या पतलुन केवल चार लोगो के पास ही थी। इतनी कम मात्रा में सामानों को देखकर अंदाज लगाया जा सकता था। अटाई गाँव बेहद पिछड़ा हुआ। यहां जीविकोपार्जन के लिए कोई साधन नहीं था। झील में पानी तो बहुत था लेकिन जमीन पथरीली होने के कारण निवासियों ने फसल लगाने का दुःसाहस नहीं किया था।

सरकारी उपेक्षा का शिकार गाँव था। एक तरह से कहा जा सकता था कि भारत के मानचित्र में ही शामिल नहीं है। अटाई गाँव की साधन हीनता की जानकारी सरकारी नौकरशाह को थी। परन्तु सरकारी नौकरशाहों के समूह से मदभेद रखने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को दण्ड स्वरूप अटाई गाँव में नियुक्त किया जाता था। इसी कारण से अटाई गाँव को विकास से कोसो दूर रखा गया। ताकि गंदी राजनीति के खेल को जारी रखा जा सके। कहानी में अटाई गाँव की सत्यता को अपने भाषा शैली में व्यक्त किया है। कहती है पूर्णतः अविकसित अटाई गाँव की सच्चाई से शासन तंत्र पूर्णरूप से परिचित था क्योंकि जो सरकारी कर्मचारी अथवा अधिकारी अपने अफसरों के विरूद्ध कार्य करता था। उसकी नियुक्ती सजा के तौर पर अटाई गाँव में की जाती थी। अटाई गाँव में सरकार का कोई दफतर था तो वह रामंदा स्वास्थ्य केन्द्र,यहां का डॉक्टर नवीन परसाद था। जो अपने मातहत अफसरों की खिलाफत की सजा के कारण भेजा गया था। उसके द्वारा मेहतरो के

https://mail.google.com/mail/u/0/#sent?projector=1 1/1

Jijnasa

ISSN : 0337-743X

घरों मेंपखाना नहीं होने के कारण आवाज उठाई इसलिए सजा के तौर पर स्थानान्तरण रामन्दा स्वास्थ्य केन्द्र में किया गया था। अटई गाँवपूरी तरह वन जंगल का इलाका है।सभी निर्धन परिवार एवं गरीब परिवार ही रहते है। आबादी बहुत कम है। शाम होते ही सन्नाटा छाजाता है। समय गुजारने के लिए एक मात्र साधन ट्रांजिस्टर ही था।

बेहद पिछड़ा ग्राम अटाई के बासिंदो के भरण पोषण के लिए कोई भी व्यवसाय नहीं था। आधिकांश आवश्यकताओं की पूर्ति यह आदिवासी समुदाय जंगलो से पूरी करता था परन्तु उन्हें नकद रूपयों कीआवश्यकता जरूर महसूस होती थी। इसलिए क्षेत्र में हरिया घास की बहुतायात पैदावार थी जिसे जानवर तक नहीं खाते थे। यहां के निवासी इसी हरिया घास के माध्यम से चटाई बुनकर हाट बाजार में बेच दिया करते थे। जहां खरीददार तक नहीं मिलते थे। कुछ ही समय से आदिवासी कुटीर शिल्प सहकारी संस्था बाजार में ये चटाई कुछ पैसों में आदिवासियों से खरीदने लगे। लेकिन सच्चाई अटाई वासियों को नहीं मालूम की संस्था द्वारा चटाई खरीदी के मद मे तीन लाख रूपये सालाना दिखाया जाता था। संस्था के सारे अफसर आदिवासियों के अधिकार के इन रूपयों को आपस में बाँटकर मजे करते है। लेखिका ने खोखली अव्यवस्था एवं आदिवासियों का हक बांटखाने पर तीखा प्रहार किया है। पन्द्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालीस को विभाजित राष्ट्र भारत के स्वतन्त्र होने पर हमारे देश में अनेक समस्याओं ने पैर पसारे। साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष समाप्त हो गया था। लेकिन अनेक समास्याएँ जिन्हें अंग्रेज छोड़ गए थे, उनका सामना देश को करना पड़ा। ऐसे में साहित्यकारों, रचनाकारों, कवियों एवं पत्रकार समुदाय की भूमिका मार्गदर्शक बनकर प्रशासन के सामने आई। अपने लेखों एवं रचनाओं में समाज, देश हित एवं निर्माण के लिए आवश्यक विषय को शामिल किया गया।जिससे की एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण हो सकें।

हमारे देश में 70 फीसदी आबादी ग्रामीण अंचलों में रहती है। यह आँकड़ा सरकारी है, परन्तु सुविधा देने की योजना जब भी बनती है तब शहर में रहने वाली 30 प्रतिशत आबादी को प्राथमिकता दी जाती है। मानवीय दृष्टिकोण के अनुरूप मूलभूत सुविधाओं में पीने का शुद्ध पानी, आवागमन के लिए सड़क, रोशनी के लिए बिजली की सुविधायें पढ़ाई के लिए अच्छे शिक्षण संस्थाएं और इलाज के लिए सर्वसुविधायुक्त अस्पताल उपलब्ध नहीं होते है। शासन की और आशाभरी नजरों से देख रहे है ताकि सरकार उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति शीघ्र कर सके, जिससे भविष्य में किसी भी ग्रामीण की इलाज के अभाव में मौत न हो सके। ग्रामीण बालक पढ़ाई के अभाव में अनपढ़ न रहे। लेखिका ने अटाई गाँव का उदाहरण देकर देश के हजारों पिछडे हुए गाँव की सच्चाई से सरकार को अवगत कराने का प्रयास किया है। इस स्थिति को सुधारने के लिए सरकार द्वारा पहल नहीं करना अटाई गाँव के निवासियों के साथ घोर अन्याय था।

संदर्भ ग्रंथ

महाश्वेता देवी की श्रेष्ठ कहानियाँ : माहेश्वर, नेशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली, 1993
भारत वर्ष तथा अन्य कहानियाँ : महाश्वेता देवी, आधार प्रकाशन, हरियाणा, 2003,
स्त्री अस्मिता साहित्य और विचारधारा : जगदीश्वर चतुर्वेदी ,सुधा सिंह, कोलकत्ता, 2004
ईट के ऊपर ईंट : प्रमोदकुमार सिन्हा, राधकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2008